OM 22 MAHARASHTRA final_Page 1 and 2 18/02/2015 17:49 Page 2

कमल से कर्मातीत तक की यात्रा

आनंद किरण, सुभाषित शब्द तो बहुत प्यारा है। संभवत: दुनिया की किसी और भाषा में वैसा शब्द नहीं। उस शब्द से बहुत-सी बातों की ध्वनि उठती है– खिले हुए फूलों की, बजती हुई बांसुरी की, अमृत के स्वाद की, मिठास की।

जीवन यूँ तो संघर्ष व उलझनों से भरा है– लेकिन जो न पहचाने, न जाने, उसके लिए। जो पहचान ले, जान ले, जीवन ही अमृत भी हो जाता है। नासमझ तो घर को खाद से भर ले सकता है, और तब दुर्गंध ही दुर्गंध हो जाएगी। समझदार खाद को घर में नहीं भरता, बगिया में फैलाता है। उसी खाद से फूलों की सुगंध उठती है। शब्द ही गालियां बन जाते हैं और शब्द ही सुभाषित।

- ब्र. कु. गंगाधर

सुभाषित हमने उन सूक्तियों को कहा है, जो बुद्धों ने कहीं, जागृत पुरुषों ने कहीं, जिनके शब्दों में शून्य की झंकार है। वे शून्य में ही मीठे नहीं, सुभाष ही नहीं, जीने में और भी मीठे हैं। इशारे हैं उनमें, इंगित हैं, दूर चांद की तरफ उठी हुई अंगुलियां हैं। जैसे फूल खिलता है– सुबह-सुबह कमल का खिला फूल; कीचड़ से निकलता है। कीचड़ को देख कर किसे भरोसा आए कि इससे कमल भी पैदा हो सकता है। कमल शब्द का ही अर्थ है कीचड़ से पैदा हुआ, मल से पैदा हुआ।

कमल के लिए संस्कृत शब्द है : पंकज। पंक का अर्थ है: कीचड़; ज का अर्थ होता है: जन्मा; कीचड़ से जन्मा। संस्कृत की कुछ खूबियां हैं! क्योंकि जिन लोगों ने उसे रचा, बुना, उसे रूप दिया, रंग दिया, उनमें बहुतों के हाथ थे। बांसुरी किसके हाथ में पड़ जाएगी, इस पर सब निर्भर है। बांसुरी तो पोली है, कौन गाएगा गीत! बुद्धों ने शब्दों को छूकर भी समाधि का रूप दे दिया।

कमल कीचड़ से खिलता है। कीचड़ से ही उठता है, कीचड़ से ही जन्मता है। कीचड़ में ही छिपा था। न तो कीचड़ को देख कर कोई कह सकता है कि कमल इसमें छिपा होगा और न कमल को देखकर कोई कह सकता है कि यह कीचड़ से पैदा हुआ होगा। मगर कमल और कीचड़ के बीच सारे जीवन की कथा है। पैदा तो हर एक व्यक्ति कीचड़ की तरह होता है, लेकिन संभावना लाता है कमल होने की।

फिर, कमल झील पर तैरता है– फिर भी झील का जल उसे छू नहीं पाता। झील में होकर भी झील में नहीं। झील में तो होता है, लेकिन अछूता। झील में तो होता है, अस्पर्शित। कमल तो झील में होता है, लेकिन झील कमल में नहीं हो पाती। यही महान पुरुष (कर्मातीत) की जीवनचर्या है।

और सुभाषित भी ऐसे ही हैं। शब्दों में हैं, लेकिन शब्दों में मत पकड़ना, नहीं तो चूक जाओगे। शब्दों से बहुत ज्यादा उनमें भरा है। शब्द को ही पकड़ा तो कुछ पकड़ में न आएगा। खोल ही हाथ लगेगी, भीतर का सार चूक जाएगा। खोल को तो अलग कर दो, शब्दों को हटा दो। शब्दों के जाल में मत उलझ जाना। उसी जाल में उलझे हुए लोगों का नाम पंडित है। शब्दों के भीतर झांको, उनमें मौन को सुनो, शून्य को अनुभव करो। शब्द अगर विचारे तो दर्शन का जंगल है फिर। जिसका कोई अंत नहीं। झाड़ियों पर झाड़ियाँ। और रोज़ घनी होती जाती हैं। और उलझाव बढ़ता जाता है। शब्दों पर ध्यान करो।

सुभाषित ध्यान करने के लिए हैं। उनको पीओ। चुप, मौन, उनको भीतर उतरने दो। उन्हें मांस-मज्जा-हड्डी-खून बनने दो। वे तुम्हारे भीतर रसधार की तरह बहने लगें। यह एक अलग ही प्रक्रिया है। विचारना बुद्धि की बात है; पी जाना, पचा लेना अस्तित्वगत है, बौद्धिक नहीं। और तब ये छोटे-छोटे वचन-ये छोटे-छोटे फूल–इतना छिपाए हुए हैं। एक-एक सुभाषित में एक-एक वेद छिपा है।(''कमल होना''। कमल समान जीवन बन कर रहे। यही कर्मातीत अवस्था है। रहना तो संसार में परंतु उसमें न फँसना। कार्य करते रहना लेकिन उनका प्रभाव मुझे न छू पाये।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। स्मृति दिवस पर दीप प्रज्वलित करते हुए सीनियर एडवोकेट नसीब कौर मान, एम.पी.ई.बी. के एक्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर विजय तिवारी, इंडियन गैस के गार्ड डिप्युटी डायरेक्टर कुलदीप भाई तथा ब्र.कु. विमला।

गलती देखने व सुनने से डर लगता है

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा हमारे से क्या चाहता है? मेरे बच्चे सम्पूर्ण बनें। पहले सर्व गुणों में सम्पन्न फिर सम्पूर्णता, कोई कमी न हो। चारो सब्जेक्ट बहुत अच्छे हैं, ज्ञान, योग, धारणा, सेवा नम्बरवार हैं। योग का ज्ञान मिला है, धारणा का भी ज्ञान मिला है। चेकिंग के साथ अटेन्शन रखो, औरों को नहीं देखो। और कैसे हैं, यह देखेंगे तो देन्शन हो जायेगा। हम कैसे है? भले सब नम्बरवन में जायें पर मुझे नम्बर टू में नहीं जाना है। छुट्टी है, इसके लिए कोई मना नहीं करता है। संगमयुग में जब से बाबा के बने तब से स्वयं को देखें फिर बाबा को देखें और समय को भी देखें, तो इस समय का बहुत फायदा ले सकते हैं। दुनिया में सबको डर है, जब कोई गलत काम करते हैं तो डर लगता है या कुछ गलती देखते हैं तो वो भी मेरी गलती देखते हैं तो डर लगता है। बाबा ने हमको निर्भय बना दिया है, पहले निर्वैर, किसी से द्वेष भाव नहीं तो निर्भय हैं। पहले अपना मित्र आप बनें यानि बाबा ने ज्ञान समझाया, योग सिखाया, धारणा पर ध्यान खिंचवाया, सेवा में समय सफल किया। जो बाबा से प्राप्ति, पालना हुई वह शेयर करते हैं, केयर करते हैं, इन्सपायर करते हैं। थोड़ा भी खराब संकल्प है तो इम्प्युअर है, उसको डर लगेगा। अपना दुश्मन आपेही बना इसीलिए मैं अपने को पद्मापदम भाग्यशाली समझती हूँ, हर कदम में हर संकल्प में नैचुरल मैं कौन, मेरा कौन, मुझे क्या करने का है...यह बहुत याद रहता है। मैं कौन तो अन्तर्मुखी, मेरा कौन तो बुद्धि ऊपर चली गई। मन, वाणी, कर्म पर अटेन्शन हो उसके लिए बाबा ने नियम, मर्यादा, सभ्यता जो बताई है वह सदा स्मृति में है। साकार में हम बहन भाई हैं, आत्मा रूप में भाई भाई हैं। दृष्टि में न किसी के लिए घृणा, न किसी के लिए विशेष स्नेह। यह अच्छा है, बाकी यह अच्छा नहीं है, तो यह कितना बड़ा पाप है। ऐसों को कभी यह स्मृति नहीं रह सकती है कि मैं कौन? मेरा कौन? एक मिनट साइलेंस में रह सच्ची दिल से अपने से पूछो। ज़रा भी किसी को मित्र, किसी को शत्रु मानना, अभी भी ज़रा सा देह-अभिमान है, बाबा की याद नहीं है। बाबा ऊपर रहता है, यहाँ आता है हमको ऊपर ले जाने के लिए। तो बार-बार बाबा की तरफ ही बुद्धि खिंचनी चाहिए, इसके लिए और किसी के परिचय की ज़रूरत नहीं है। बाबा अपना इतना अच्छा परिचय खुद ही देता है इसलिए धर्म, जाति, रंग, भाषा से बुद्धि पार हो। ऐसी स्थिति हो तो औरों को भी यह सच्चाई और प्रेम के वायब्रेशन मिलें। यही सेवा है। दुनिया में सच्चाई और प्रेम का देवाला है, झूठ और वैर भाव दुनिया में बहुत है। बाबा ने सबको प्रेम से देख करके पावन बनाया है। जैसे बाबा ने हम सबको पावन बनाया है, क्या से क्या बन गये हैं और खुशी में नाच रहे हैं, ऐसे हमें अब औरों को बनाना है। बाबा ने सिखाया है – जैसा अन्न वैसा मन। खाओ तो क्या खाओ, पहनो तो क्या पहनो। कोई फैशन नहीं। अमृतवेले 4 बजे से लेके रात तक पूरी दिनचर्या बनाकर दी है। तो चेक करो, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने की स्थिति तक आये हैं और कोई बात नहीं, यह बात...वह बात...नमस्ते। न सुनना है, न सुनाना है इसलिए मैं फ्री हूँ। क्या सुनूँ, कोई बात है ही नहीं, तुम बात बताओगी लेकिन मैं सुनूंगी ही नहीं तो किसको सुनाओगी फिर दूसरी सुनायेगी इसलिए पहली बार ही नहीं सुनो। कहो टाइम नहीं है। यह समय ही मुझे सम्पूर्ण सम्पन्न बनायेगा। भले बनाने वाला बाबा है यह पक्का है, बाबा के बिगर कोई नहीं बनाता है। बाबा कैसे बनाता है, समय अनुसार पहचान दे रहा है इसलिए कान खोलके बाबा की सुनाई हुई बेहद बातें ही सुनो, और बातों के लिए कान बंद करो। मुझे अच्छा लगता है हियर नो इविल, सी नो इविल...। इविल माना ज़रा भी गलत बात नहीं, उसको फियर नहीं होगा और अगर ज़रा भी सुनेगा, बोलेगा, देखेगा तो फियर होगा, टियर्स (आँखों से आँसू) आयेंगे। फियर नहीं है तो चियरफुल है।

गैरन्टी है, आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना दूंगा!

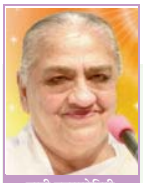

दादी हृदयमोहिनी अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहो। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशनसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करेंगे। सदा इसी खुशी में उड़ते रहो। चेक करो शुरु से लेकर बाबा ने हमें कितने खज़ाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हमारा ड्रामा में भाग्य था जो बाबा के पास पहुँच गये। बाबा के घर में रहते हैं, खाते हैं ये कभी भूल नहीं सकता। अपनी चेकिंग करो कि दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। ऋषि मुनि भी चाहते हैं भगवान हमें दिखायी दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया। जितना बाबा में मेरापन लायेंगे तो खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा में खो जाओ। भगवान के साथ रहने वालों का गायन है। बाबा के साथ हमारा पार्ट है। बाबा सवेरे-सवेरे उठाता है। हरेक के दिल से निकलता है मेरा बाबा। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी दी है हमारी आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना दूंगा! भले कामकाज करते हैं लेकिन नशा क्या रहता है भगवान मेरा हो गया। लोग भगवान के लिए क्या-क्या करते हैं लेकिन वह हमारा हो गया। वह हमारे लिए क्या-क्या कर रहा है! बाबा मेरा है, ऐसे नहीं बहनों का ज्यादा है, पहले मेरा है। अरे, जिसको इतना समय याद करते थे वह हमारा हो गया कितनी खुशी की बात है। अनुभव भी होता है वह मेरा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है। हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। जिसे दुनिया पुकार रही है वह हमारा हो गया। हमारे दिल से क्या निकलता है - मेरा बाबा। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बीतते हैं। कभी ऐसा समझा था कि हम भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे! जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं उनकी निशानी सदा खुशनसीब की होगी। जब हम छोटे थे तो इतना नशा थ, कहते थे कि जो हमारी शक्ल देखेगा खुश हो जायेगा क्योंकि हम भगवान के घर में रहते हैं। वह हमारा बाप है। बाबा का परिचय याद रहने से भी खुशी होती है। बातें तो संगठन में आयेंगी क्योंकि संगठन में हम भी रहे हैं। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है, रिवाजी थोड़ेही हैं लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। सवेरे भगवान से गुडमॉर्निंग करते हैं, यह अपना भाग्य देख खुशी होती है। बाकी आपस में थोड़ी बहुत खिटपिट होती है, यह भी पेपर समझ पास होना है। पास होकर कहां जायेंगे? ब्रह्माबाबा के साथ सतयुग में। कहाँ थे, कहाँ पहुंच गये, इस अपने भाग्य की स्मृति रहती है? हमको बाबा ने ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बनाया है, बस यही गायन करते रहो। हमारे पर बाबा की नज़र पड़ गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ल न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ! बाबा मेरे साथ है यह स्मृति में रखो। भगवान के घर में आये हैं, अगर यहाँ खुशी नहीं मिलेगी तो कहाँ मिलेगी! बाबा की पालना में पल रहे हो। आपके भाग्य को देख और भी खुश होते हैं, हरेक को यहां रहने का चांस नहीं है। दुनिया भगवान के लिए तड़फती है और आप उसके साथ रहते हो। ड्रामा ने और बाबा ने मंज़ूर किया है जो आपको यहां रहने का भाग्य मिला। भागवत पढ़कर आँखों में आँसू आते हैं, वह आपका ही यादगार है जो भगवान के साथ रहते हो। सब बातें खत्म कर दिल में दिलाराम को बिठा लो। खुशी कभी नहीं गंवाना।